RAJYA SABHA

Thursday, the 1st August, 1991/10th Sravana, 1913 *(Saka)*

The House met at eleven of the clock, Mr. Chairman in the Chair.

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

Standard Internal Cod

261. *[The questioner (Shri Ghuf-ran Azam) was absent. For answer,* vide *col.* 33 infra.]

*262. SHRI PRAMOD MAHAJAN: t

SHRI VIREN J. SHAH:

Will the PRIME MINISTER be pleased to state:

(a) whether there is any standard i internal code which could be used for processing Vedic Sanskrit texts;

(b) which code out of NCST, C-DAC, DOE, CMC has been accepted as the standard code; what are the details in this regard;

(c) does the GIST Card support the standard code and *can* it process all characters used in Vedic Sanskrit; if so, the details thereof; and

(d) whether such a code is being followed by Sanskrit researchers abroad as well; if so, the details thereof?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PERSONNEL, PUBLIC GRIEVANCES AND PEN SIONS (SHRIMATI MARGARET ALVA): (a) Yes, Sir.

(b) The Bureau of Indian Standards (BIS) has prepared the draft Indian Standard for Indian Script Code for Information Interchange (ISCII). This standard was prepared by the panel which included representatives from the Department of Electronics (DOE), National Centre for Software Technology (NCST), Bombay, Centre for Development of Advanced computing (C-DAC), Pune and CMC Limited.

*The question was actually asked On the floor of the House by Shri Pramod Mahajan.

289 RS—1

(c) Yes, Sir. The Graphics and intelligence based Script Technology (GIST) Card can process characters used in Vedic Sanskrit (with accent) as defined in BIS Standards.

श्री राम अवधेश सिंह : सभापति जी, मैं प्रधान मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि जो रॉयल्टी की घोषणा हुई है कोयले पर, उससे बिहार को डेढ़ सौ करोड़ की हानि हुई है।

श्री सभापति : यह आप क्या कर रहे हैं। यह क्वश्चन आवर है। आप बैठ जाइये।

This is Question Hour. You are not permitted.

श्री राम अवधेश सिंह : आप क्वश्चन आवर को सस्पेंड करके... (व्यवधान)

श्री सभापति : मैं इसकी इजाजत नहीं देता हूं। इसकी इजाजत नहीं दी जाएगी।

(d) No, Sir.

I will name you if you persist. You get out of the House.

SHRI RAM AWADHESH SINGH: I will not.

MR. CHAIRMAN You will be thrown out.

. (ssrgtrH)

MR. CHAIRMAN; He should be named. I am naming him. Nothing will go on record. The House will go according to rules. Anybody going against the rules will not be permitted. It is not permitted, Hooli-gainism is not permitted.

Yes, Mr. Pramod Mahajan.

SHRI DIPEN GHOSH: Sir, let the supplementary be asked in Sanskrit and the reply also given in Sanskrit.

श्री प्रमोद महाजन : सभापति जी, सरकार ने इस बात को स्वीकार किया है कि भारतीय लिपि कोड के भारतीय मानक का मसौदा तैयार किया है। मेरी जानकारी में यह मसौदा 1980 में बना और

इलक्ट्रानिक विभाग और राजभाषा विभाग की ओर से इस "इसकी" का उपयोग 1988 से अनिवार्य कर दिया गया है। इस स्थिति में मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहूंगा कि इलेक्ट्रानिक विभाग के अंतगत आने वाले उन्नत अभिकलन विकास केन्द्र (सटर फार डिवैलपमेंट आफ एडवांस कम्प्यूटिंग), राष्ट्रीय साफ्टवेयर प्राद्यौगिक केन्द्र और कम्प्यूटर मेंटनस सटर, यह जो तीन प्रमुख संस्थायें हैं, यह "इसकी" का उपयोग करती हैं या नहीं करतीं, और अगर न करती हों, तो वह क्यों नहीं करतीं ?

SHRIMATI MARGARET ALVA: Sir, the internal code draft has been circulated for comments only in July 1991. It was not developed in 1980. I may also tell the hon. Member that it was at the International Conference in Vienna in 1990 that, for the first time, the code was discussed and. it was very much appreciated that a breakthrough had been reached in India. I can assure him that nobody stood in the way of whatever was to have been done. It has been circulated. Ninety days' time has been given for comments after which it will be formally adopted.

श्री प्रमोद महाजन : सभापति जी, मुझे लगता है कि मंत्री महोदया जी को कल उनके उत्तर में सुधार करना पड़ेगा। मैं दावे के साथ कहता हूं कि 1988 को राजभाषा विभाग और इलैक्ट्रानिक विभाग की ओर से इस कोड का उपयोग अनिवार्य बना दिया गया, फिर भी दिल्ली, पूना और मुंबई में ये जो तीन प्रमुख संस्थायें हैं वे उसका उपयोग नहीं कर रही हैं और न करने के कारण देश में भी इस कोड का विकास रुका हुआ है और और देशों के साथ जिस प्रकार का संबंध हमारा तुरंत बनना चाहिए था अपनी भाषाओं के आधार पर वह बन नहीं रहा है। इसीलिए जैसे अंतिम उत्तर में उन्होंने कहा है कि विदेश में जो संस्कृत अनुसंधानकर्ता हैं वे इसका उपयोग कर नहीं रहे हैं, क्योंकि स्वदेश में ही जब हम इसका उपयोग कर नहीं रहे हैं इस "इसकी" का तो मैं मंत्री महोदया ने जो कहा है उस पर विश्वास रख कर इतना ही पूछना चाहता हूं इस "इसकी" का उपयोग भारत में सभी संस्थायें करें इसके लिए क्योंकि हम जब तक भारत में नहीं करेंगे तो विदेशों में कोई नहीं करेगा और एक बार हम भारत में करना शुरू कर दें तो विदेश के साथ हमारी जानकारी का आदान-प्रदान संगणक द्वारा आसान बन जाएगा और इसलिए मैं यह जानना चाहता हूं कि इस "इसकी" का उपयोग कब से, अगर अनिवार्य किया है आपका यह कहना है तो यह कब से अनिवार्य होगा ताकि हमारा अपने देश में और विदेशों में इसके द्वारा सम्पर्क बना रहे ?

SHRIMATI MARGARET ALVA: Sir, we have developed the GIST Card by which we are able to use the PCs for all the Indian languages—the 15 languages which are included in the Eighth Schedule—as well as a few other languages. As far as classical Sanskrit is concerned, there was a need for phonetics also to be built into the system. Because of this, perhaps, more efforts were put in. but the code—the internal code—had been developed. As I said, it has been appreciated and it is under circulation and the moment the 90 days' period is over, it will be adopted.

श्री प्रमोद महाजन : सभापति जी, मैंने जो पूछा नहीं उसका विस्तार से उत्तर आ रहा है। आप भी भाषाविद हैं, प्रधान मंत्री जी भी बहुत भाषायें जानते हैं। मैंने इतना ही पूछा कि जो हमने सांकेतिक लिपि "इसकी" के नाम से बनाई है उसका उपयोग, जिस कार्ड में उसका उपयोग कर सकते हैं लेकिन कर नहीं रहे हैं...

श्री सभापति : वह कह रहे हैं कि 90 दिन हो जायेंगे तब शुरू होगा।

श्री प्रमोद महाजन : नहीं-नहीं, उन्होंने यह नहीं कहा, वह उसके बारे में कुछ नहीं कह रही हैं यह नहीं कह रही हैं कि इसका उपयोग कब से शुरू होगा, क्योंकि विश्व के साथ सारा आदान-प्रदान केवल इसके कारण रुका पड़ा है और इन तीन

संस्थाओं के कारण उन्होंने अपना-अपना, अलग उनकी सांकेतिक लिपि है, अपना अलग कोड है और वह उपयोग नहीं कर रही हैं, इसलिए मैं चाहता हूं कि यह जल्दी कब होगा ?

THE PRIME MINISTER (SHRI P. V. NARASIMHA RAO) Sir, this question is being answered by the Department of Electronics. They can only develop something. They can make it ready for use, but to make it incumbent on all the Departments for use, that will have to be looked into by another Department. I would like to assure that this is the standard. The hon. Member might be knowing that when a standard key-board—even for a typewriter—is being made, there are lots of people who come up with lots of suggestions and so many corrections are made, in the case of Telugu, I know, it took more than 25 years to finalise the key-board. There were S or 4 key-boards running at the same time adding to the confusion. But this has been finalised. It will be possible for the Government of India to only say that this is the thing to be used here, until further notice. May be, something better may come up after 10 or 15 years. We cannot really say that this is for all time to come. This is a continuing process. I can assure that we are at a stage when we can take a Anal decision in the matter.

श्री प्रमोद महाजन : मैं जिन तीन संस्थाओं का उल्लेख कर रहा हूं वह इलेक्ट्रानिक विभाग की है, और किसी विभाग की नहीं हैं, किन्हीं निजी लोगों की भी नहीं हैं।

श्री पी० वी० नरसिंह राव : वह तो ये तैयार कर के हम को दे देती हैं। उसके बाद ये अनिवार्य बनाना हमारे विभागों के लिए, मंत्रालयों के लिए है। वह इलेक्ट्रानिक्स डिपार्टमेंट नहीं करता। वह तो राजभाषा विभाग को करना पड़ेगा या प्राइम मिनिस्टर आफिस में जो हमारे दूसरे विभाग हैं, उनको करना पड़ेगा।

श्री प्रमोद महाजन : महोदय, मैंने जिन तीन संस्थाओं का उल्लेख किया, पुणे, दिल्ली और बंबई की, वह तो इलेक्ट्रानिक्स विभाग की हैं।

श्री पी० वी० नरसिंह राव : इन संस्थाओं को भी करना पड़ेगा क्योंकि और तो कोई विकल्प है नहीं।

SHRI N. E. BALARAM; Sir, when processing basic Vedic Sanskrit characters, the accent is very important. There are—according to my knowledge, according to my information— nine accents in our country. There is the Jatharatha accent, there is the Rathajatha accent, there is the Pra-kriya accent, there is the Southern accent, there is the northern accent, there is the Bengali accent, etc. In Kerala, we have the Jatharatha accent, I would like to know, which is the standard accent accepted by the BIS?

SHRIMATI MARGARET ALVA: This GIST Card which has been prepared would deal with all the fifteen languages . . .

SHRI N. E. BALARAM: I am not talking about the language. I am talking about the accent. What is the standard accent we have adopted for using the Card? Is it Jatharatha or Rathajatha or Prakriya? What is the standard accent?

SHRI P. V. NARASIMHA RAO: The accent which we have in Sanskrit text is common to all parts of India. If you take the Rig Veda *text*, the same accent by way of symbols will be given in a book. If it is pronounced differently in different areas—not even differently—the accent is the same, but the intonation is different
that is a different matter. I do not
. jama

think there is going to be any inter-regional differences in the accent or the intonation of the accent. I do not expect that. But I would like to go into it once again. I am quite sure. But I will again double-check whether there are differences in accent.

कुमारी चन्द्रिका प्रेमजी केनिया : सर, जब हम वैदिक संस्कृत के बारे में यहां पर प्रश्न उठा रहे हैं तो मेरे जेहन में जो बात आती है, वह संस्कृत भाषा के बारे में है। यह संस्कृत भाषा, भाषाओं की भाषा है और इसका उद्भव भारत में हुआ है, यह हमारे लिए बहुत गर्व की बात है। लेकिन साथ में यह आश्चर्य और दुख भी होता है कि संस्कृत भाषा का इस्तेमाल सिर्फ वैदिक किताबों में ही रह गया है। आपने थ्री लैंग्वेज फार्मूला जो शिक्षा नीति के बारे में बनाया हुआ है, उसमें भी संस्कृत भाषा का इस्तेमाल कम हो गया है, उसकी उपेक्षा हुई है। तो मैं सरकार से यह जानना चाहूंगी कि क्या आप ऐसे कदम उठायेंगे जैसेकि संस्कृत पाठशालाओं को ग्रांट्स देना, फंड्स देना जिससे कि संस्कृत भाषा का इस्तेमाल सामान्य जनता तक पहुंच सके।

SHRI p. V. NARASIMHA RAO: Sir, this has nothing to do with the question. She is asking about teaching of Sanskrit in schools.

MR. CHAIRMAN: Yoursupple mentary does not relate tothis. It should be addressed to theMinister of Education.

SHRI P. V. NARASIMHA RAO: Particularly, about Vedic Sanskrit which requires more symbols.

SHRI PRAMOD MAHAJAN: That way, the Minister of State who is replying to this question does not deal with the Electronics Department.

डा० रत्नाकर पांडेय : माननीय सभापति जी, वैदिक लिपि को कंम्प्यूटर के उपयोग के लिए सारे विश्व ने स्वीकार किया है और माना है कि यह सबसे अच्छी, सहज, सरल और व्यावहारिक लिपि है। मान्यवर, जब प्रधान मंत्री जी ने राजभाषा की चर्चा की तो राजभाषा के नियम का पालन हर जगह होना चाहिए। मान्यवर, जब कंम्प्यूटराइजेशन हुआ तो गृह मंत्रालय और कार्मिक मंत्रालय की ओर से आदेश दिए गए कि सारे मंत्रालयों में कंप्यूटर लगाए जायें, लेकिन वह बाईलिंगुअल नहीं लगे। उन्हें हिंदी, अंग्रेजी, देवनागरी लिपि और रोमन स्क्रिप्ट दोनों में लगना चाहिए था। पिछली सरकारों और कांग्रेस की सरकार ने बराबर कोशिश की कि जो राजभाषा का नियम, वार्षिक कार्यक्रम और संविधान प्रदत्त अधिकार है राजभाषा का, उसके अनुरूप काम हो, लेकिन गृह मंत्रालय या कार्मिक मंत्रालय में कोई यह उत्तरदायित्व लेने के लिए तैयार नहीं है कि किसने रोमन कंप्यूटरों के प्रयोग का आदेश दिया? क्या प्रधान मंत्री इस संदर्भ में सदन को बतायेंगे कि किसने यह कार्यवाही की और क्या भविष्य में जो राजभाषा का नियम है, उसके अनुरूप देवनागरी कंप्यूटर्स के प्रयोग में कोई स्ट्रिक्ट आर्डर आपकी सरकार पास करने को तैयार है ताकि सरकार के सामने राजभाषा का जो अपमान हो रहा है, वह अपमान बंद हो?

SHRIMATI MARGARET ALVA: When the Raj Bhasha Samiti met the Department of Electronics in 1990, a reference was made to a commitment given by the then Home Minister in a seminar in Bombay for placing bilingual computers in Government departments. The Department of Electronics has suggested to the Department of Official Languages that they are willing to help in the process. We are prepared and we are able to provide the necessary support for making an existing PC bilingual or even tri-lingual, if necessary, in keeping with the three-language formula.

[THE VICE-CHAIRMAN, SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN, in the Chair]...

DR. RATNAKAR PANDEY: This is not the question of three-language formula. This is the question of the

Official Language Act which is being violated by the Government of India. This is very important.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI-MATI JAYANTHI NATARAJAN): Shrimati Sushma Swaraj. *(.Interruptions).* No, please. Our Chairman has asked me to call the next person.

DR. RATNAKAR PANDEY I am asking something and the Minister is replying something else. My question is whether the Department of Personnel has issued orders that Roman computers should be installed... *(Interruptions)* .

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI MATl JAYANTHI NATARAJAN): She is answering.

DR. RATNAKAR PANDEY Is the Government going to issue orders to different Departments to implement the Official Languages Act effectively and for this purpose, computers in both the scripts should be introduced and provided to them. Are you going to pass such orders or not? I am not talking of the meetings.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): Let her answer you now. She is answering.

SHRI A. G. KULKARNI; It is a fast train.

डा० बापू कालदाते : आपकी अंग्रेजी भी ठीक है।

श्री प्रमोद महाजन : आज पांडे जी को भी राजभाषा छोड़नी पड़ी।

SHRIMATI MARGARET ALVA: Madam, we are prepared to have the bilingual computers functioning. The question is that at the moment they are all Roman, but as I just now mentioned the supplementary, the GIST Card which has now been produced will be able to deal with making the existing PCs bilingual or trilingual as is required. The cost of each Card is going to be Rs. 5000 and therefore, it is going to be possible to convert the existing computers which were in English into the Indian languages as and when we require.

श्रीमती सुषमा स्वराज : उपसभाध्यक्ष महोदया, मैं आपके माध्यम से माननीया मंत्री महोदया से जानना चाहती हूं कि आज कम्प्यूटर के क्षेत्र में इतनी प्रगति हो रही है कि टाकिंग कम्प्यूटर बनाने की बात चल रही है और टाकिंग कम्प्यूटर के लिए जब उपयुक्त भाषा के चयन की बात आई तो संस्कृत को टाकिंग कम्प्यूटर की भाषा चुना गया। जहां एक ओर यह खुशी की बात है कि विश्व की सभी भाषाओं की तुलना में ... (व्यवधान) ...

[श्री सभापति पीठासीन हुये]

सभापति जी, अच्छा हुआ आप आ गए क्योंकि आप स्वयं जानते हैं संस्कृत भाषा की वैज्ञानिकता और उसके अंदर जो अथाह शब्द भंडार है, उसको देखते हुए टाकिंग कम्प्यूटर की भाषा संस्कृत चुनी जा रही है। लेकिन जहां एक ओर यह खुशी की बात है कि विश्व की सभी भाषाओं की तुलना में संस्कृत को टाकिंग कम्प्यूटर के लिए उपयुक्त भाषा माना गया है, वहां यह अफसोसजनक बात है कि भारतीय कम्प्यूटर वैज्ञानिक इस भाषा से अनभिज्ञ हैं।

मैं मंत्री महोदया से यह जानना चाहती हूं कि जब टाकिंग कम्प्यूटर के लिए संस्कृत चुन ली जाएगी तो मुख्य तौर से मूलतः यह जिम्मेदारी भारतीय कम्प्यूटर वैज्ञानिकों पर आएगी कि वह उसके लिए संस्कृत में कोड तैयार करें। तो इस संभावना को ध्यान में रखते हुए मंत्री महोदया अपने विभाग में क्या कर रही हैं जिससे भारतीय कम्प्यूटर वैज्ञानिकों को संस्कृत भाषा सिखाई जा सके ताकि वे इसका कोड तैयार कर सकें ?

SHRIMATI MARGARET ALVA: Sir, as I said, the code has already been prepared. It has been worked on for ten years, it has been pre-pared and it is now in the draft which has been circulated.

श्रीमती सुषमा स्वराज : मैं आगे की बात कर रही हूं टाकिंग कम्प्यूटर के लिए।

श्री प्रमोद महाजन : आप इतना ही कहें कि विभाग मांग रही हूं। जब तक विभाग न मिले तो आप क्या कह सकती हैं।

श्रीमती सुषमा स्वराज : मैं कोड की बात नहीं कर रही। यह टाकिंग कम्प्यूटर के लिए संस्कृत भाषा चुनी गई है, लेकिन हमारे यहां कम्प्यूटर वैज्ञानिकों को संस्कृत नहीं आती। इसलिए उसके प्रचार-प्रसार के लिए यह जिम्मेदारी भारत पर आने वाली है तो उसको देखते हुए आप क्या कर रहे हैं? मैं यह प्रश्न पूछ रही हूं।

श्री पी० वी० नरसिंह राव : उस जिम्मेदारी को संभालने की तैयारी करेंगे।

कुमारी सईदा खातून : माननीय सभापति महोदय, मैं माननीय प्रधान मंत्रीजी से यह जानना चाहती हूं कि संकेतकों का अनुसरण विदेशों में भी संस्कृत अनुसंधानकर्त्ताओं द्वारा किया जा रहा है। इसमें रशियन का कहां तक रोल है? वहां के अनुसंधानकर्त्ताओं ने क्या इसमें पहल की है और वह कहां तक पहुंचे हैं? क्योंकि हमें यह जानकर खुशी होती है कि रशियन लेंगुवेज खासतौर से संस्कृत के नजदीक की है और ऐसा लगता है कि रशियन लैंगवेज की पैदाइश ही संस्कृत से हुई है। तो मैं यह जानना चाहती हूं कि कौन-कौन से और विदेश हैं, जहां पर इसके अनुसंधानकर्त्ताओं ने इसमें अनुसंधान करने की पहल की है?

श्री पी० वी० नरसिंह राव : इसमें कम्प्यूटर से संबंध है, भाषा से नहीं।

श्री सभापति : वह पूछ रही हैं कि क्या और देशों ने भी संस्कृत कम्प्यूटर बनाया है?

श्रीमती मारग्रेट आल्वा : मेपरेट कमीश्नर लाना पड़ेगा।

श्री पी० वी० नरसिंह राव : यह संस्कृत और उसमें वैदिक संस्कृत के बारे में है। एक बिट पर 256 करेक्टर्स बन सकते हैं। संस्कृत उसमें आ सकती है, कई दूसरी भाषाएं आ सकती हैं। हमारे पास सबसे पहले हमको ट्राय-लेंगुवेल बनाने की आवश्यकता है क्योंकि थ्री लेंगुवेज फार्मूला कई राज्यों में माना गया है, लेकिन यह सुविधा न होने के कारण उसका काम नहीं हो रहा है। पहले हम इससे शुरू करें कि एक भाषा से दो कैसे बनाएं, तीन कैसे बनायें, ब्रेकेट में अगर किसी दूसरी भाषा का शब्द लगाना हो तो उसके लिए दूसरे कम्प्यूटर पर जाने की जरूरत न पड़े। यह इब्तदायी चीज हैं, जिनमें हम काम कर रहे हैं। इसके बाद आगे जैसे-जैसे प्रगति होगी, हम बराबर उसका साथ देंगे या बल्कि खुद ही कुछ अगुवाई करेंगे।

*263. *[The questioner (Shri Chatu-ranan Mishra) was* absent. For *answer,* vide *col.* 34 infra],

*264. *[The question (Maulana Obaidullah Khan Azmi) was absent. For answer,* vide *col.* 34-35 infra]

*265. *[The questioner (Shri Pasu-mpon Tha. Kimuttinan) was absent. For answer,* vide *col.* 35-36 infra]

Involvement of rural population in the Food Processing Industries

*266. DR. JINENDRA KUMAR JAIN: SHRI RAM JETHMALANI:

Will the Minister of FOOD PROCESSING INDUSTRIES be pleased to state:

(a) whether Government have taken any steps to involve rural people in the food processing industry by setting up cottage industries in the rural areas where fruit and vegetables are grown in sufficient quantity;

(b) if so, what were these steps and when were such steps taken;

t The question was actually asked on the floor of the House by Dr. Jinendra Kumar Jain.